



मुगलकाल में महिलाओं की स्थिति का एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० पवनेश कुमार

श्री गाँधी इण्टर कालेज घेडी बछेडा सेक्टर म्यू 2 ग्रेटर नोयडा

गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश

सारांश, मुगलकाल में नारी जाति को पुरुष वर्ग की तुलना में कम सम्मान प्राप्त था। कुछ जातियों में कन्या का जन्म अशुभ तक मान लिया गया था। इसका एक कारण यह था कि कन्या के घर वालों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। मुस्लिम लोग हिंदु कन्या का अपहरण तक कर लेते थे, वैसे हिंदू और मुसलमान दोनों जाति के लोग कन्या के जन्म से खुश नहीं होते थे। वह पुत्र के जन्म पर खुशी मनाते थे। राजपूताने में कन्या, जन्म के बारे में लोगों की जो धारणा थी उसके बारे में भी टॉड ने लिखा “वह पतन का दिन समझा जाता था, जब एक कन्या का जन्म होता था।” पुत्र के जन्म पर शानदार दावतों का आयोजन किया जाता था, मंगल गीत गाए जाते थे पर कन्या के जन्म पर परिवार में दुःख के बादल छा जाते थे। जब कोई स्त्री संयोग से एक से अधिक बार कन्याओं को जन्म देती थी तो उसे बहुत अपमानित होना पड़ता था। यहाँ तक कि कभी कभी उसे तलाक भी दे दिया जाता था। पुत्र की कामना राजा से लेकर रंक तक सभी को रहती थी। अकबर के कथन से यह बात स्पष्ट है “यदि प्रभु ने मुझे पुत्र दिया तो मैं शेख मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तक पैदल आगरा से चलकर जाऊँगा।”

मुख्य शब्द, कन्या, राजकुमारियों शहजादी स्त्रियाँ, महिला आदि।

परिचय, मुगलकाल विशेषतया पुरुष वर्ग का महिलाओं पर ऐश्वर्य, विलासिता का युग प्रतीत होता है। पुरुष वर्ग, विशेषतया धनवान और शासक वर्ग स्त्रियों से पर्दा करवाना अपने खानदान के लिए शान की बात मानता था। यही कारण है कि इस समय में गरीबों की तुलना में सम्पन्न घरानों में पर्दा प्रथा का अधिक सख्ती से पालन होता था। अकबर ने पर्दा प्रथा का पालन करने के संबंध में आदेश जारी किया कि “अगर कोई महिला गलियों और बाजारों में बिना पर्दे या घूँघट के दिखाई दे अथवा जिसने अपनी इच्छा से पर्दे को तोड़ा हो तो उसे वैश्यालय में भेजा जाए और उस पेशे को अपनाने दिया जाए।” हिन्दुओं ने शासक वर्ग की देखा देखी पर्दा प्रथा अपनाया और कुछ हिन्दु नारियों को मुसलमानी अत्याचारों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पर्दा प्रथा को अपनाया गया इस प्रकार सम्पन्न हिन्दु परिवारों में स्त्रियों में पर्दा करना एक गौरव की बात मान ली गई। अमीरों की स्त्रियाँ चारों ओर से ढके हुए विशाल भवनों में रहती थीं। स्त्रियों के पास हिजड़े काम करने के लिए नौकर के रूप में रखे जाते थे। अन्य पुरुषों से स्त्रियों को मिलने की छूट नहीं थी। अनेक मुगलकालीन कवियों के वर्णन से ज्ञात होता है कि बंगाल और उत्तर भारत में हिन्दु स्त्रियों में पर्दा प्रथा प्रचलित थी। स्त्रियाँ जहाँ रहती थीं उन भवनों में पुरुषों का प्रवेश निषिद्ध था। वहाँ केवल

हिजड़े ही आजा सकते थे। यदि डॉक्टर की भी ज़रूरत पड़ती थी तो वह भी बीमार स्त्री को नहीं देख सकता था। बीमार स्त्री के शरीर पर गर्म पानी से भिगोया गया कपड़ा रगड़ा जाता था उसी की गंध आदि से डॉक्टर रोग की पहचान करने की कोशिश करता था। कुलीन स्त्रियों का बिना पर्दा के घर से बाहर जाना असम्भव था। एक इतिहासकार ने लिखा है कि मुस्लिम स्त्रियाँ चरित्र हीनता तथा गरीबी को छोड़कर कभी भी बाहर नहीं निकलती थीं। जब उन्हें बाहर जाना होता था तो उनके पर्दे की विशेष व्यवस्था की जाती थी। उनके लिए पालकी मंगाई जाती थी जिस पर पर्दे की पूरी व्यवस्था रहती थी। उसके आसपास हिजड़े पहरेदार के रूप में तैनात रहते थे। बिना बुर्का ओढ़े या घूँघट किए किसी स्त्री के घर से बाहर निकलने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

जब कभी कोई शहजादी हाथी पर बैठने की इच्छा करती थी तो इसके लिए बड़ी सावधानी के साथ व्यवस्था करनी पड़ती थी। पहले तो राजकुमारियों के घूमने के बारे में सम्राटो से अनुमति लेना जरूरी था। दूसरे, राजकुमारी की यात्रा प्रायः प्रातःकाल में आयोजित होती थी। तीसरे, उनकी देखभाल के लिए हिजड़े तैनात रहते थे। घर के दरवाजे के पास से दासों को भी हटा दिया जाता था। हाथी महल के पास एक तम्बू के अन्दर लाया जाता था। महावत अपने मुँह पर कपड़ा डाल लेता था ताकि शहजादी को न देख सके। हाथी का हौदा भी ढका रहता था। जब तक राजकुमारी घर से बाहर रहती थी तब तक सड़क पर पुरुषों का आना जाना रोक दिया जाता था। इस सम्बंध में विदेशी यात्री ने अच्छा वर्णन किया है। मुसलमानों में पर्दा के बारे में इतनी सावधानी रखी जाती थी कि यदि भूल से भी पर्दा टूट जाता था तो स्त्री को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था। काबुल के गर्वनर अमीरखाँ ने अपनी पत्नी को केवल इस कारण छोड़ दिया था कि दुर्भाग्य से उससे पर्दा टूट गया था। नूरजहाँ इसका अपवाद थी। वह पर्दा छोड़कर जनता के सामने आया करती थी।

इस सम्बन्ध में इतिहासकारों ने वर्णन किया है। निम्न वर्ग की महिलाओं को सारे काम अपने हाथ से करने पड़ते थे, इसलिए वह पर्दा नहीं कर पाती थीं। दूसरे निम्न वर्ग की महिलाएँ उच्च वर्ग की महिलाओं की तुलना में इज़्जत या सामाजिक प्रतिष्ठा भी कम होती थी। उच्च वर्ग के व्यक्ति अपनी महिलाओं से पर्दा कराना अपने लिए गौरव की बात समझते थे। दक्षिण में मालावार की महिलाएँ पर्दा की दृष्टि से अधिक स्वतन्त्र थीं। वह अतिथियों से बातें भी कर सकती थीं। हाँ, दक्षिण भारत में भी मुस्लिम महिलाएँ बुर्के बिना घर से बाहर नहीं निकल सकती थीं। राजपूताने में राजपूत महिलाएँ आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में लड़ने के लिए भी जाती थीं। इसी प्रकार वह शिकार पार्टियों में भी भाग ले सकती थीं। पर्दा प्रथा के बारे में विद्वान् एक मत नहीं हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि पर्दा प्रथा भारत में एक आयातित प्रथा थी। यह मुसलमानों के साथ बाहर से अरब, तुर्किस्तान आदि से आई थी जबकि कुछ विद्वानों का कहना है कि यह भारत के बाहर यह प्रथा कहीं थी ही नहीं। एक इतिहासकार की मान्यता है कि मुगलकाल में पर्दा प्रथा के बारे में भारत के बाहर के देश अवगत नहीं थे। यह प्रथा राजपूती व सामाजिक विशेष परम्पराओं के कारण उत्तरी भारत में ही जन्मी थी। एक मध्यकालीन इतिहासकार के अनुसार वह ऐसा नहीं मानते। उन्होंने बताया कि

राजपूतों के इतिहास से ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि मुसलमानों के सम्पर्क से पहले उनमें पर्दा प्रथा थी। राजपूत महिलाओं ने तो युद्धों और बाहरी गतिविधियों में खुलकर भाग लिए थे।

मुगलकाल में विवाह प्रथा

मुसलमानों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। मुस्लिम शासक सम्पन्न जाति के थे। इसीलिये सम्रटो तथा अमीरों के महलों में असंख्य उपपत्नियाँ रहती थीं। आइने अकबरी के अनुसार अकबर की 5000 स्त्रियाँ थीं जिनकी देखभाल के लिए एक अलग विभाग स्थापित कर दिया गया था। यद्यपि कुरान के अनुसार कोई मुसलमान चार विवाह कर सकता था परन्तु अपने वैभव के मद में मुगल शासक वर्ग इस बन्धन को नहीं मानता था। बहुविवाह के परिणाम स्वरूप सपत्नियों में कई बार कलह का वातावरण हो जाता था तथा गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो जाती थीं। पत्नियों को अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त पति की ओर से मासिक भत्ता भी मिलता था। हिन्दुओं में सामान्यतया एक विवाह का ही प्रचलन रहता था और सामान्य हिन्दू एक विवाह करता था और वह अपनी पत्नी के चरित्रहीन न होने पर जीवन पर्यन्त तलाक नहीं देता था। यदि किसी की पत्नी से बच्चे पैदा नहीं होते थे, वह बाँझ होती थी तब वह ब्राह्मण की सहायता से अपना दूसरा विवाह कर सकता था। मण्डलगो (Mandelso), आमवर्ते (Orme) तथा स्टेवोरिनस (Stavorios) ने भी हिन्दुओं के एक विवाह का समर्थन किया है। समर्थ हिन्दू भी बहुविवाह करते थे। डॉ. पाण्डेय के अनुसार राजा मानसिंह कछवाहा की 1500 पत्नियाँ थीं।

मुगल काल में बाल विवाह

सल्तनत काल की भाँति मुगल काल में भी हिन्दुओं में बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी। इस समय तक भी हिन्दु मुसलमानों की ओर से निश्चिन्त नहीं हो सके थे। उन्हें हर समय यह आशंका रहती थी कि लड़की बड़ी होने पर कहीं कोई मुसलमान उसका अपहरण न कर ले जाए। इसी कारण वह अपनी पुत्री का कम उम्र में ही विवाह कर देना चाहता था। सामान्यतया 7-8 साल की लड़की की शादी कर दी जाती थी। कम उम्र में पुत्री का विवाह कर देने वाला व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली माना जाता था। इस बुरी प्रथा को रोकने के लिए अकबर ने आदेश जारी किया था कि कोई भी व्यक्ति अपनी लड़की का विवाह 12 वर्ष से कम आयु में तथा लड़के का विवाह 16 वर्ष से कम आयु में नहीं कर सकता। विवाह में दहेज के लेनदेन का भी रिवाज़ था। उच्च जाति में कन्या पक्ष वाले वर के पिता को दहेज देते थे और निम्न वर्ग में वर पक्ष कन्या के पिता को रुपये देता था। लालच में आकर कुछ लोग अपने से अधिक उम्र वाली कन्या से भी विवाह कर लेते थे।

मुगल काल में स्वयंवर प्रथा—

मुगल काल में कुछ जातियों में स्वयंवर की प्रथा भी प्रचलित थी। सामान्यतया माता पिता योग्य वर खोज कर उसके साथ पुत्री का विवाह करते थे। राजपूतों में स्त्रियों को अपना पति स्वयं चुनने की भी छूट थी। स्वयंवर के आयोजन में राजकुमार, राजा महाराजा भाग लेते थे। ताराबाई ने अपने विवाह की यह शर्त रखी थी कि “मैं उस

व्यक्ति के साथ शादी करूंगी जो मेरे पिता को पठानों से मुक्त कराएगा।” इसी प्रकार रूपनगर की राजकुमारी ने मेवाड़ के राजा से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की थी। टॉड ने ऐसे कई उदाहरण दिए हैं जिनसे राजपूतों की स्वयंवर प्रथा की पुष्टि होती है।

मुगल काल में महिला पत्नी के रूप में

मुगलकाल में विवाह के उपरान्त लड़की अपने माँ बाप से अलग होकर पति गृह में रहती थी। वहाँ उसको वैसी स्वतन्त्रता नहीं मिल पाती थी जैसी कि पिता गृह पर उपलब्ध रहती थीं। पति गृह में पत्नी को सास और पति के नियन्त्रण में रहना पड़ता था। घर की महिलाएँ सास, ननद आदि उसे परेशान करती थीं। इसके अलावा घर के कार्य झाड़ू लगाना, रसोई का कार्य करना आदि सब कुछ करना पड़ता था। उसे अपने सेवा कार्य से सास श्वसुर आदि को सन्तुष्ट रखने का प्रयत्न करना पड़ता था। इतने पर भी पत्नी का जीवन सुखमय नहीं रह पाता था। मुसलमानों में तो पत्नी को तलाक दिया जा सकता था, परन्तु हिन्दु पत्नी को अपने घर में ही रहकर सब कुछ सहना पड़ता था। हिन्दु महिला तब तक खाना नहीं खाती थी जब तक उसका पति, सास, श्वसुर खाना नहीं खा लें। इसी प्रकार पत्नी को देर से सोकर जल्दी उठना पड़ता था। इतना अवश्य है कि धार्मिक कार्यों की सम्पन्नता के लिए उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण मानी जाती थी, जैसा कि जहांगीर की आत्मकथा के वर्णन से स्पष्ट है। एक विदेशी यात्री के अनुसार वैश्य लोग अपनी पत्नी को अपेक्षाकृत सुखी रखते थे। पति पत्नी के साथ विश्वासघात नहीं कर सकता था। इतिहासकारों के अनुसार कुलीन घरानों में अनेक स्त्रियों को अपमान, दमन का जीवन व्यतीत करना पड़ता था।

मुगल काल में महिला विधवा के रूप में

विधवा नारी का विवाह यों तो नमूने के रूप में हरेक युग में हुआ है परन्तु सामान्यतया हिन्दुओं में विधवा नारी को विवाह की छूट नहीं थी। कोई कोई विधवा विवाह करने में सफल हो जाती थी। मुसलमानों में उसके लिए विवाह करने में कोई विशेष बाधा नहीं आती थी। हिन्दुओं की विधवा नारी के लिए पुनर्विवाह निषिद्ध था। पुरुष तो कुछ विशेष परिस्थितियों में दूसरा विवाह कर सकता था यदि पुरुष पत्नी के साथ अत्याचार करता था तब भी पत्नी पुनर्विवाह नहीं कर सकती थी। इस सम्बंध में डॉ. अल्तेकर ने बताया है कि यदि पति नैतिक दृष्टि से कमजोर होता या पत्नी से दुर्व्यवहार करता उस स्थिति में भी पत्नी तलाक नहीं दे सकती थी। निम्न वर्ग की विधवा कभी कभी पुनर्विवाह कर लेती थी। सामान्यतया विधवाएँ सिर के बाल कटवा कर सफेद वस्त्र धारण कर सादा जीवन व्यतीत करती थीं। विधवा होना पाप समझा जाता था। डेला वेला ने विधवाओं के बारे में बताया है कि वह पुनर्विवाह नहीं कर सकती थीं। उनके बाल काट दिए जाते थे, उनकी उपेक्षा की जाती थी।

मुगल काल में महिला माता के रूप में

मुगल काल में महिलाओं की दशा भले ही अच्छी न रही हो, उन्हें पर्दा आदि के बन्धन में रहना पड़ा हो परन्तु माता के रूप में महिलाओं को बड़ा सम्मान प्राप्त था। सन्तान माता को सम्मान देती या उसकी आज्ञा का पालन करना अपना पवित्र कर्तव्य समझती थी। शाही घरानों में भी माँ को 'कोनिश', 'तसलीम', 'सिजदा', आदि किया जाता था। जहाँगीर ने लिखा है कि घर में पहुँच कर उसने अपनी माँ के सम्मान में 'सिजदा' और 'तसलीम' किया था। मेवाड़ के राणा संग्राम सिंह द्वितीय नित्य प्रति अपनी माँ को प्रणाम करके भोजन करता था। मुगल काल में स्त्रियाँ आदर्श 'मध्यस्थ' का कार्य करती थीं और झगड़े शान्त कराती थीं।

मुगल युग के दौरान, नूरजहाँ और मुमताज महल के मामले को छोड़कर, आमतौर पर क्षेत्र की पहली महिला सम्राट की माँ थी और उनकी मुख्यरानी नहीं थी। महारानी माता की मृत्यु के बाद ही साम्राज्य के मुख्य संरक्षक ने उनकी जगह ली। बाबर से शुरू होने वाले मुगल सम्राट होने पर शानदार प्रदर्शन किया अपनी माताओं के सम्मान में बाबरनामा और गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा के कई उदाहरण हैं जो साम्राज्यों द्वारा माताओं को दिखाए गए बड़े सम्मान को प्रकट करते हैं। राज्याभिषेक समारोहों के बाद यह वह माँ थी जिसे सम्राट ने पहली बार देखा था। इसलिए त्यौहारों और जन्मदिनों की तरह आनन्दित होने के अन्य दिनों में भी ऐसा ही था। अबुल फजल ने कहा कि जब लंबे उपवास समाप्त हो गए, तो मांस का पहला व्यंजन अकबर के पास उसकी माँ के स्थान से चला गया। एक बार जब अकबर की माँ लाहौर से आगरा तक एक पालकी से यात्रा कर रही थीं, तो अकबर उनके साथ यात्रा कर रहा था। एक स्थान पर उसने पालकी को अपने कंधों पर ले लिया, आहद ने उसे नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँचाया। तुजूके जहाँगीरी में एक स्थान पर जहाँगीर ने अपनी माँ के लिए अपने प्यार और सम्मान को इन शब्दों में प्रकट किया उसी दिन महाम हिम मिजोर जमानी उनकी माँ आगरा से आए, और मैंने अनन्त सौभाग्य प्राप्त किया उस पर प्रतीक्षा का आशीर्वाद। मुझे आशा है कि उसके स्नेह और प्यार की छाया इस दमन के सिर पर बारह मासी हो सकती है।

मुगलकाल में महिलाओं की साज सज्जा

धनवान लोगों की महिला सम्पूर्ण शरीर पर आभूषण धारण करती थीं। अबुल फजल ने महिलाओं के 37 प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया है जिनमें से पाँच आभूषण तो सिर पर धारण करने के थे। इनमें 'चौक' और 'शीशफूल' मुख्य थे। कानों के लिए भोर भेंवर, बोली, चम्पाकली, करण फूल, पीपलपट्टी जैसे आभूषणों का रिवाज था। आरम्भ में नाक में कोई आभूषण धारण नहीं किया जाता था, परन्तु बाद में नाक में सोने की नथ या बेसर पहनी जाने लगी थी। इसी प्रकार, नाक में लोंग भी धारण की जाती थी। इनके अलावा शरीर के विभिन्न अंगों में धारण करने के लिए नेकलेस, हार, गुलूबन्द, बाजूबन्द, गजरा, कंगन, कड़े, चूड़ी, चन्द्रकंटिका, कटिमेखला, घुंघरू, पायल, बिछुआ, अंक, अंगूठी, आदि का प्रचलन था।

धनवान महिलाओं के गहने सोने, चाँदी, जवाहरात के होते थे और गरीबों के चाँदी आदि के। हाथी दांत की चूड़िया और कंगन, गेंडे की चूड़ियाँ और अंगूठियाँ बनाने का भी रिवाज था। एक तोले के आभूषण बनाई करीब 64 दाम होती थी। अबुल फजल ने स्त्रियों के पहनावे के बारे में बताया है कि उस समय आभूषणों का शौक था और अपनी क्षमता के अनुसार उन्हें धारण किया जाता था। हिन्दु और मुस्लिम स्त्रियाँ अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार रेशम या सूत के कपड़े धारण करती थीं। मुस्लिम महिलाएँ सामान्यतया पायजामा और कुर्ते का प्रयोग करती थीं। दुपट्टा हिन्दु मुस्लिम दोनों वर्ग की स्त्रियाँ धारण करती थीं। अमीर महिलाएँ काबा और कश्मीरी शाल धारण करती थीं। पीटर डेला वेला ने स्त्रियों की वेशभूषा का वर्णन करते हुए बताया है कि मुसलमानों की महिला इसी प्रकार के श्वेत वस्त्र या तो सादा अथवा सुनहरे फूलों से सज्जित कर पहनती हैं। उनका ऊपरी लिबास छोटा, किन्तु एक औरत की निस्बत एक मर्द के लिबास से अधिक मिलता जुलता होता है।

प्रायः उनके वस्त्र मूल्यवान और अच्छी मलमल के होते हैं और उनके पायजामे श्वेत या लाल रंग के होते हैं तथा बहुधा हर प्रकार के रंगों से रंजित नाना प्रकार के रेशमी कपड़ों के होते हैं। भारत की हिन्दु महिलाएँ साधारणतया लाल रंग के अतिरिक्त किसी दूसरे रंग का प्रयोग नहीं करती हैं और शरीर के अधिकतर भाग पर वह कपड़ा धारण नहीं करती, किन्तु एक कुर्ता पहनती हैं जिनकी बाँहें भुजा के मध्य भाग तक ही होती हैं कोटि के नीचे पैरों तक वस्त्र लहंगा पहनती हैं। जब वह बाहर निकलती हैं तो एक साधारण बनावट के चौड़े आकार की चादर से अपने आपको ढँक लेती हैं। जिसका उपयोग मुसलमान महिला भी करती हैं।” गरीब महिला साड़ी पहनती हैं और जिसके एक छोर से सिर को ढँक लेती हैं। साड़ी के अलावा वे चोली और अंगिया भी पहनती हैं। दक्षिण की महिला सिर नहीं ढँकती जैसा कि फरिश्ता ने वर्णन किया है। उसने बताया है कि दक्षिण में और गोलकुण्डा में महिला पुरुषों के साथ साथ घूम लेती हैं। गिरदानों सिरगिस ने कालीकट की महिला के बारे में बताया है कि उच्च वर्ग की महिला कमर के ऊपर बहुत सफेद और मुलायम सूती वस्त्र पहनती है जबकि निम्न श्रेणी की महिलाएँ कमर के ऊपर वस्त्रहीन होती हैं। नूरजहाँ वेशभूषा की बड़ी शौकीन थी। उसने नूरमहली, पंचटोलिया, बदला, हेर दूदमी जैसे फैशन के नए वस्त्रों का प्रचलन किया था। निकोला कोंटो ने महिलाओं की साज सज्जा का वर्णन करते हुए बताया है कि धनवान महिलाएँ सिर को सुनहरे जड़ाऊ कपड़े से ढँकती हैं और केशों को रेशमी डोरे से बाँधती हैं और बीच में बड़ा सुनहरा सूआ खोंसती हैं वे एक सुनहरा डोरा जो सोने के मुलम्मे के विभिन्न रंगों से रंजित कपड़ों के टुकड़ों से बने होते हैं, बालों में लटकाती रहती हैं।

मुगल काल में कन्यादान

अधिकांश मुगल सम्राटों में पवित्र कन्यादान करने की परम्परा थी जिसे औरंगजेब ने बखुबी निभाया था जैसे ब सम्राटों में दान पुण्य (खैरात) करने की प्रवृत्ति भी विद्यमान थी मुहम्मद तफाख्खुर की दो लड़कियों के विवाह के अवसर पर सम्राटों ने केड़े हजार रुपये कन्यादान के रूप में प्रदान किए। (बहर दो पज हजार रुपया कन्यादान मरहम्मत

फरमूदन्द) इस फारसी अभिलेख में 'कन्यादान' शब्द प्रयोग किया गया है, इससे ज्ञात होता है कि हिन्दु मुस्लिम दोनों की संस्कृति में यह शब्द सामान्य तौर पर सन्पूर्ण मुगलकाल में प्रचलित था और कन्यादान की प्रथा का प्रचलन था। एक अन्य अवसर पर सैय्यद मुतसव्वुर खां की पुत्री के विवाह के लिए औरंगजेब सम्राट ने एक हजार रुपये प्रदान किए। हसन अब्दाल के अभियान के अवसर पर सम्राट एक दिन बाग में ठहरा, जहाँ दीवार के नीचे एक वृद्धा का निवास गृह था। ज्ञात करने से मालूम हुआ कि बुढ़िया की दो अविवाहित पुत्रियाँ हैं। पुत्रियों के विवाह हेतु दो हजार रुपये प्रदान किए। ताहिर खां (सूबेदार मुल्तान) के नाम फरमान भेजा गया कि औरंगजेब सम्राट को सूचना मिली है कि उस तरफ के अधिकतर लोग कन्याओं के जन्म लेने पर उनका वध कर देते हैं। अतः तुम्हें चाहिए कि जो भी अपनी पुत्री का वध करे उसे इस कार्य से रोका जाए और उस पर 2500 रुपये दण्ड लगाया जावे और यदि कोई व्यक्ति दण्ड वहन करने के योग्य न हो तो उसे कड़ी हिदायत के साथ छूट दी जावे।

मुगल काल में विधवाओं के साथ सहानुभूति

कुछ विधवाएं दानपुण्य लेने के लिए लाहौर से औरंगजेब सम्राट के दरबार में उपस्थित हुईं जो वास्तव में गरीब थीं। लाहौर से आते समय सम्राट को नजर (भेंट) करने के लिए अपने साथ एक कुरआन शरीफ भी लेकर आईं। जब सम्राट के सम्मुख उक्त कुरआन शरीफ लाया गया तो उसने यह कहकर लौटा दिया कि, "मैं इस प्रकार की पेशकश को स्वीकार नहीं करता हूँ विधवाओं को वापस दे दो जो खैरात देनी है वह दे दी जाएगी और कहा कि प्रत्येक की वास्तविक स्थिति वर्णन की जावे।" विधवाओं की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उसने इस भेंट को लौटा दिया और यह भी प्रदर्शित कर दिया कि उन द्वारा भेंट करना या न करना सम्राट के खैरात के कार्य को प्रभावित नहीं कर सकता। यही प्रवृत्ति लगभग सभी मुगल सम्राटों में देखने को मिलती है।

बलात कब्जे में की गई महिलाओं को छुड़ाने के आदेश

जम्मू से प्राप्त 1680 ई० के एक वकिये के अनुसार मुरीदखां थानेदार काहमरो के गुमाश्ता फतेहचन्द ने एक गरीब व्यक्ति की धर्मपत्नी को बलात तरीके से एक हिन्दु के हवाले करवा दी। उक्त गरीब बहुत गिड़गिड़ाया किन्तु सुनाई नहीं की। सम्राट ने आदेश दिए कि शाहजादा मुहम्मद आजम के नौकर अफगान खां, जो कि जम्मू की फौजदारी में है, को लिखा जावे कि उक्त गुमाश्ते को सम्राट के दरबार में उपस्थित होने हेतु रवाना करे और उक्त दुरवेश (गरीब) की स्त्री पुनः उसे दिलावे। इस प्रकार के बहुत से ऐसे अभिलेख उपलब्ध हैं जिनसे असहाय स्त्रियों के प्रति मुगलों की सहानुभूति प्रकट होती है किन्तु उदाहरण के लिए यहाँ कुछ एक का ही वर्णन किया गया है।

मुगल काल में सती प्रथा

सम्पूर्ण मुगलकाल में हिन्दु समाज के सर्वण समाज में यह प्रथा अत्यधिक रूप से प्रसिद्ध थी। राजपूत राजघरानों में सती प्रथा का प्रचलन था और मुगल साम्राज्य की ओर से इस प्रथा पर प्रतिबंध भी दिखाई नहीं पड़ता है। संभवतः इसका कारण यह रहा हो कि राजपूत राजघराने इसे धार्मिक और सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक समझते थे। स्वेच्छा

से भी की जाने वाली सती प्रथा पर यदि प्रतिबंध लगाया जाता तो संभव था कि राजपूतों द्वारा विस्तृत रूप में मुगल साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया जाता। इसलिए राजघरानों की नाराजगी से बचने के लिए इस प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं किया गया होगा। 24 जीकादा सन् जलूस 10 8 मई 1667 ई० शाम के समय जुमदतुल्मुल्क ने आकिलखां को संदेश भेजा कि पृथ्वीसिंह पुत्र महाराजा जसवन्त सिंह, जो 2000 जात 1000 सवार का मनसब रखता था, का चेचक की बीमारी के कारण देहान्त हो गया। राजा अनिरुद्धसिंह हाड़ा की पुत्री उसके साथ सती हुई। रावल की बेटी गर्भवती होने के कारण जीवित रही। सम्राट ने दीवान नहीं लगाया दीवान मौकूफ फरमूदन्द इससे यह भी ज्ञात हुआ कि मृतक की गर्भवती स्त्री उसके साथ चिंता में नहीं जलती थी। लेकिन यह कुप्रथा मुगलकाल में महिला जाति पर जीता जागता अत्याचार था जिसे रोकने के मुगलों द्वारा स्थाई समाधान नहीं किये गये। मुगल महिलाओं ने मुगल सम्राटों के हरम के अंदर अपना पूरा जीवन बिताया। खौफ और रहस्य की भावना आज भी किसी के दिमाग में भर जाती है जब कोई मुगल हरम के बारे में सुनता है। कई चीजों को लिखा गया है और कई चीजों से मुगल महिलाओं के जीवन के बारे में अनुमान लगाया गया है। जिस तरह से मुगल महिलाओं ने अपना जीवन बिताया, उनके रहने के स्थान, उनके भोजन और कपड़े, परदा और धर्म, सुख और अतीत, सीखने और शिक्षा और यहां तक कि उनके प्यार और आक्रोश, कई लोगों के लिए हमेशा से ही दिलचस्पी का विषय रहे हैं। मुगल महिलाएँ कोई साधारण महिला नहीं थीं। वह शाही महिला थीं और इसलिए, उनका सामाजिक जीवन निश्चित रूप से मध्ययुगीन महिलाओं की तुलना में बहुत अलग थी हरम के कैदियों, उनके रोजमर्रा के जीवन और सम्राट के साथ उनके संबंध मुगल सम्राट की हरमों में बड़ी संख्या में महिलाएँ थीं और इसमें विभिन्न जातियों, प्रांतों और समुदायों की महिलाएँ रहती थीं। मनुची ने कहा कि “मुगल महल के भीतर अलग अलग कई जातियों की दो हजार महिलाएँ थीं”

मुस्लिम महिलाओं के अलावा, राजपूत महिलाओं सहित हिंदू महिलाएँ भी थीं, और यहां तक कि मुगल सम्राटों के हरम में ईसाई महिलाएँ भी थीं। बाबर और हुमायूँ के हरम मामूली थे। आकार में। लेकिन बाद में अकबर के समय से मुगल हरम में बड़ी संख्या में महिलाओं के होने का एक विस्तृत मामला बन गया। अकबर के हरम में लगभग 5000 महिलाएँ हैं। जहाँगीर, शाहजहाँ और शुद्ध औरंगजेब के हरम भी बहुत बड़े थे। हॉकिन्स के अनुसार, जहाँगीर का था। “तीन सौ पत्नियाँ जहाँ रानियों के रूप में प्रमुख होती हैं।” टेरी के अनुमानों के अनुसार जहाँगीर के हरम में “चार पत्नियाँ, और ‘रखैल और बगाल की महिलाएँ शामिल थीं, जो उनकी संख्या को पूर्ण हजार बनाने के लिए पर्याप्त थीं।” जब कोई उन महिलाओं के बारे में सोचता है, जो हरम के अंदर रहती थीं, तो केवल राजा की पत्नियों की तस्वीरें, नाचने और गाने वाली लड़कियों और गुलाम और नौकर लड़कियों की तस्वीर उनके दिमाग में आती है। लेकिन हरम में केवल इन श्रेणियों से संबंधित महिलाओं का समावेश नहीं था। बेशक, यह महिलाएँ हरम में रहती थीं, लेकिन इनके अलावा कई अन्य महिलाओं भी थी जो हरम के अंदर रहती थी। वह राजा की माँ, सौतेली माँ, पालक माता, चाची, दादी, बहनें, बेटियाँ और अन्य महिला रिश्तेदार थीं। यहां तक कि नर बच्चे बड़े होने तक हरम के अंदर

रहते थे। तब, वहाँ महिला प्रतीक्षा रत, दास और नौकर लड़कियाँ और कई महिला अधिकारी और गार्ड थे जिन्हें सम्राट द्वारा हरम की विभिन्न आवश्यकताओं की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था। हरम के क्वार्टर के आस पास के इलाकों की रक्षा के लिए हिजड़े भी थे। महिला भाग्य टेलर भी हरम के अंदर रहते थे। कुछ महिलाओं और योनियों ने जासूसों के रूप में काम किया और उन्होंने सम्राट को हरम महिलाओं की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। महिलाएं आमतौर पर शादी, जन्म, खरीद, नियुक्तिया उपहार के रूप में हरम में आती हैं।

मुगल कालीन महिलाओं की जीवन शैली

हरम में पर्दा कठोर नियमों से हरम महिलाओं का जीवन चलता था। महिलाओं को आमतौर पर हरम से बाहर निकलने की स्वतंत्रता नहीं थी क्योंकि वे पसंद करते थे। अगर वह बाहर जाती तो उनके चेहरे घूँघट के पीछे अच्छे से छिपे होते थे। लेकिन हरम के अंदर वह प्रसन्न हो सकते थी। उन्हें विभिन्न प्रकार की विलासिता और आराम भी प्रदान किए गए थे। हरम में दैनिक जीवन उल्लास और उमंग से भरा था। कम से कम, यह वह तस्वीर है जो बेर्नियर और मनुची जैसे विदेशी, जो एक समय में चिकित्सकों के रूप में हरम तक पहुंचते थे, अपने खातों में लिखते हैं कि उन्होंने बड़े आराम, विलासिता और भौतिकवादी सुख का जीवन व्यतीत किया। यह महिलाएं शानदार अपार्टमेंट में शानदार तरीके से रहती थीं सुसज्जित सुंदर बगीचों, फव्वारे, टैंकों और पानी के चैनलों के साथ संलग्न। उन्होंने बेहतरीन सामग्री से बने सुंदर और महंगे कपड़े पहने और खुद को सिर से पाँव तक आभूषणों से सजाया। वह शायद ही कभी बाहर गई लेकिन जब उन्होंने किया, ज्यादातर बार रैंक की महिलाओं ने शैली में आराम से यात्रा की और हाथी की पीठ पर और पालकी से सुशोभित होदे में। सम्राट और उनके हरम कैदियों की दैनिक जरूरतें थीं शाही विभागों द्वारा काफी हद तक पूरा किया गया। इनका भोजन शाही रसोई से होता था।

मुगल काल में महिलाओं का भोजन

मुगलों के आहार में कई प्रकार के समृद्ध और स्वादिष्ट व्यंजन शामिल थे। शाही रसोईघर विस्तृत रूप से व्यवस्थित था। मुगल सम्राट शाही रसोई के खर्च को पूरा करने के लिए रोजाना एक हजार रुपये खर्च करते थे। विभिन्न देशों के रसोइयों को शाही रसोई में काम पर लगाया जाता था और वह रोज कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करते थे। सम्राट ने हरम में अपना भोजन लिया। अबुल फजल के अनुसार, “हरम की महिलाओं को सुबह के समय रसोई से भोजन ले जाने की अनुमति होती है, और रात तक चलती है।” शाही पुरुषों की तरह चबाने, सुपारी (पान) शाही महिलाओं की रोजमर्रा की एक आवश्यक आदत बन गई। इसने होठों और दांतों को लाल कर दिया था और यह उन दिनों में सुंदरता की चीज माना जाता था। पान को आगंतुकों के सम्मान के रूप में भी प्रस्तुत किया गया था।

मुगल काल में महिलाओं का मनोरंजन

चूँकि हरम महिलाएँ शायद ही कभी महल के बाहर जाती थीं, उनका ज्यादातर समय निवास के अंदर ही व्यतीत होता था। हरम के कर्मचारियों को प्रदर्शन करने के लिए अपने संबंधित कर्तव्य थे। शाही महिलाएँ ज्यादातर समय अपने आप को सजाना, संवारना और संवारना चाहती हैं। हरम के अंदर उनके मनोरंजन के लिए कई इंतजाम किए गए थे। संगीत और नृत्य की महिला अधीक्षक और कई महिला गायक और नर्तकियाँ रहती थीं। महिलाओं ने कई इनडोर खेल खेले। कभी कभी वह गुलिस्तान जैसी किताबें पढ़ते हैं और शेख सादी शिराजी के उद्यान। शाही महिलाओं में से कुछ दूसरों की तुलना में एक कदम आगे निकल गई और उन्होंने स्मारकों और उद्यानों के निर्माण जैसे महान काम किए, जिसमें साहित्य और व्यापार में भाग लेने वाले साहित्यिक मूल्य के कार्यों की रचना की और कभी कभी समकालीन राजनीति में भाग भी लिया।

मुगल काल में महिला पालाक माताओं के रूप में

मुगल गृहस्थी में वास्तविक माताओं के अलावा काफी कम संख्या में माताएँ पाई जाती थीं। समय समय पर उत्पन्न होने वाले कई राजनीतिक और अन्य संकटों के कारण, कई बार बच्चा वास्तविक माँ से अलग हो जाता था और इसलिए उसे देखा जाता था। यहां तक कि हरम की अन्य महिलाओं द्वारा खिलाया गया स्तन। अन्य नर्सें भी थी, सभी नर्सों ने हरम में उच्च पद पर कब्जा कर लिया और अनागास के नाम से जानी गईं। अपने बचपन में अकबर अपनी माँ हमीदा बानो से कुछ सालों के लिए दूर हो गए थे क्योंकि मौजूदा राजनीतिक हालात थे। अकबर की इन नर्सों में से कुछ शम्स-उद-दीन की पत्नी जिजी अनगा थी या फख्र-अन-निसा नादिम कोका की पत्नी, तोगी बेगी की पत्नी कोकी अनगा, सादी यार कोका की माँ पीजीजान अनगा या खलिदार अनगा या बीबी रूपाय भवाल अनगा, हुमायूँ की एक उप पत्नी हकीमा नामक एक महिला थी और जैन खान कोका की माँ, लेकिन उनकी सभी नर्सों में सबसे प्रमुख थीं महाम अनगा जिन्होंने अकबर के शासन काल के शुरुआती वर्षों के दौरान एक महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका निभाई थी। मुगल सम्राटों ने अपनी पालक माताओं का बहुत सम्मान किया, अकबर महम अनगा और जिजी अनगा जहाँगीर के बहुत शौकीन थे उनके संस्मरणों ने उनकी पालक माँ, कुतुब-उद-दीन खान कोका की माँ की मृत्यु की सूचना निम्न शब्दों में दी। कुतुब-उद-दीन खान कोका की माँ जिसने मुझे अपना दूध पिलाया था और वह मेरी माँ के रूप में थी या मेरी ही तरह की माँ की तुलना में दयालु थी, जो भगवान की दया के लिए प्रतिबद्ध थी।, मैंने उसकी लाश के पैरों को अपने कंधों पर रखा और उसे रास्ते का एक हिस्सा उसकी कब्र के पास ले गया। अत्यंत दुःख और शोक के माध्यम से मुझे खाने के लिए कुछ दिनों तक कोई झुकाव नहीं था, और मैंने अपने कपड़े नहीं बदले।

निष्कर्ष, मुगलों के समय में अपनी माता और पालक माताओं के अलावा, उनके पिता की अन्य पत्नियों को मुगलों द्वारा बहुत सम्मान के साथ देखा जाता था। जोधाबाई जहाँगीर की माँ थी। लेकिन रुकैया बेगम और सलिमा सुल्तान बेगम के लिए भी उनका बहुत सम्मान और स्नेह था।, अकबर ने हाजी बेगम का बहुत सम्मान किया। दादी, चाची और

अन्य बुजुर्ग संबंधों का भी सम्मान किया गया और उनकी अच्छी देखभाल की गई। बाबर और जहाँगीर और गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा के संस्मरणों से कई बार यह पता चलता है कि मुगल सम्राट ने अपनी माताओं और अन्य बुजुर्ग महिला रिश्तेदारों के लिए सम्मान किया था। जैसा बेवरिज का कहना है कि, “यह कहा जा सकता है कि बाबर और हैदर दोनों ही इस राय से अवगत कराते हैं कि बड़ी महिलाओं के लिए धोखेबाजी उनकी उम्र और सेट का एक स्थायी लक्षण था।” इन महिलाओं को भी मुश्किल समय सहित कई बार, उनके सक्रिय समर्थन का श्रेय दिया जाता है। उनके सम्राट और कई संकट हल हो गए थे। बाबरनामा की कई घटनाओं से पता चलता है कि बाबर ने अपने परिवार की महिलाओं के लिए सम्मान की मात्रा बताई थी, भले ही वह उनके प्रतिद्वंद्वी शिविर के थे। गुलबदन बेगम के खातों से भी हमारे पास यह साबित होता है। एक जगह गुलबदन बेगम ने लिखा: सभी चार कामों के माध्यम से, जो मेरे पिता आगरा में थे, वह अपनी पितृ मौसी को देखने के लिए शुक्रवार को जाते थे। एक दिन यह बहुत गर्म था, और उनकी महारानी मेरी अकां ने कहा, “हवा बहुत है, अगर आप इस शुक्रवार को नहीं गए तो यह कैसे होगा भिखारियों को परेशान नहीं किया जाएगा। महामहिम ने कहा, महाम! यह आश्चर्य जनक है कि आपको ऐसी बातें कहनी चाहिए! टबू साकी बेटियों सुल्तान मिर्जा, जो पिता और भाइयों से वंचित रह गए हैं अगर मैं उन्हें खुश नहीं करता, तो यह कैसे किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 बदरूनी, आईन-ए-अकबरी' II “अगर कोई युवा महिला शहर की सड़कों और बाजारों में घूमती हुई पाई जाती थी और ऐसा करते समय उसने खुद को ढका नहीं या बिना ढके रहने दिया... तो उसे वेश्याओं के इलाके में जाकर वही पेशा अपनाना पड़ता था।” पृष्ठ 391-92.
- 2 ओविंगटन. अकबरनामा (अनुवाद), “भारत में सभी फैशनेबल महिलाओं को उनके पति कड़ी निगरानी में रखते थे और उन्हें अजनबियों से मिलने-जुलने की मनाही थी।” –
- 3 हैमिल्टन. (मुस्लिम महिलाएँ) जब तक बहुत गरीब या बेईमान न हों, घर से बाहर नहीं निकलती थीं।”
- 4 डेला वैले. “मुस्लिम महिलाएँ जब भी बाहर निकलती थीं, तो हमेशा नकाब या घूंघट में रहती थीं।” “जब कोई राजकुमारी हाथी पर सवारी करना चाहती थी, तो हाथी को महल के गेट के पास एक तंबू में लाया जाता था और महावत अपना चेहरा कपड़े से ढंक लेता था ताकि जब राजकुमारी ढके हुए हाथी में बैठे तो वह उसे देख न सके।”
- 5 बर्नियर यात्रा विवरण “इन सेनाओं में यह बात आम थी कि तीन चीजों से सावधानीपूर्वक बचना चाहिए। पहली, बेहतरीन और साथ ले जाए जा रहे घोड़ों के बीच जाने से बचना जहाँ उनके लात मारने का खतरा होता है। दूसरी, शिकार के मैदान में और तीसरी, हरम की महिलाओं के बहुत करीब जाने से।” – पृष्ठ 374.

- 6 वेनीप्रसाद. आईन-ए-अकबरी' (अनुवाद), "उसने पर्दा प्रथा को तोड़ा और सार्वजनिक रूप से बाहर आने में कोई संकोच नहीं किया।" "यहाँ दक्कन और गोलकुंडा में पुरुष और महिलाएँ कमर पर कपड़ा लपेटकर घूमते थे और इसके अलावा कोई और कपड़े नहीं पहनते थे।" I पृष्ठ 321
- 7 टॉड, द एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान (लंदन आदि 1920), खंड प, पृष्ठ 26.
- 8 वे सारे तथा समान सोच रखने वाले अन्य जरूरी शक्ति संचय में वंचित कर दिए गए थे तथा चोर अंधकार में छोड़ दिए गए थे। अब्दुरहीम खानेखानाँ ने प्रभावशाली 'गुट' में समझौता कर लिया, पर महावत खाँ जैसे स्वाभिमानी लोगों में उन्हें सम्मान देने में इनकार कर दिया।
- 9 ईश्वरी प्रसाद: 'द मुगल एम्पायर', पृ0 200
- 10 अबुल फजल: 'अकबरनामा', पृ0 66-67
- 11 निजामुद्दीन अहमद: 'तबकासत-ए-कबरी', दो, पृ0 143